International Seminar [Hybrid Mode] on "Integrating Indian Knowledge System with Modern Education: Explore frameworks for incorporating IKS into contemporary curricula, aligning with NEP 2020" 19-20 Dec'2024
With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0024

**********प्रस्तुतकर्ता***ईश्वरी कुमार सिन्हा**सहायक शिक्षक**जिला-बालोद***छत्तीसगढ़**********

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और प्रौद्योगिकी

INDIAN KNOWLEDGE SYSTEMS AND TECHNOLOGY

प्रस्तावना – साथियों ! हम सभी अपने भारतीय ज्ञान प्रणाली से बहुत हद तक परिचित हैं | श्रुति अर्थात जिसे सुना गया हो तथा स्मृति जिसे याद रखा गया हो | ये वो दो महत्वपूर्ण कड़ी हैं जिनमे हमारे गौरवशाली राष्ट्र के ज्ञान तंत्र की नींव खाड़ी है | इनमें से वैदिक काल अर्थात वेदों के जमाने से श्रुति ग्रन्थ ही आधारभूत मानी गई है | वैदिक साहित्यों के बारे में हमने सुना है कि वे पहले ईश्वरीय उत्पत्ति के तहत मौखिक रूप में मौजूद थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हम तक महान ऋषियों, संतों, व विद्वानों ने श्रुति तथा स्मृति के माध्यम से लाने में अपनी महती भूमिका निभाई है | ये ज्ञान आध्यात्मिक होने के साथ-साथ वैज्ञानिक, सांस्कृतिक व भौतिक पहलुओं को अच्छी तरह से सहेजे हुए हैं | इनमें तकनीकी (प्रौद्योगिकी) विशेषताओं की बारीकियां प्राचीन काल से आज तक विविध रूपों में हमें देखने को मिलती रही हैं | तकनीकों का सहज एवं सरलता से उपयोग करके हम अपने आसपास उपलब्द्ध अनेकों दुर्लभ अवसरों का संरक्षणपूर्वक दोहन कर अपने दैनिक जीवन क्रियाकलापों को सुदृढ़ बना सकते हैं |

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली : एक संक्षिप्त परिचय - भारत को विश्वगुरु के रूप में पूरे संसार में भर में प्राचीन काल से ही मान्यता रही है | इसके पीछे की मूल में यहाँ की वैज्ञानिकता की कसौटी पर सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य अति सूक्ष्म से अनंत ब्रह्माण्ड तक की सटीक व्यवहारिक जानकारी युक्त ज्ञान प्रणाली रही है | इनमें वैदिक कॉर्पस अर्थात वेदों की उत्पत्ति, संरचना, और विषय वस्तु, युगों के माध्यम से ज्ञान, संख्या प्रणाली और माप की इकाइयाँ, गणित, खगोल विज्ञान, ज्ञान ढांचा और वर्गीकरण, भाषा विज्ञान, स्वास्थ्य कल्याण और मनोविज्ञान, नगर नियोजन और वास्तुकला इत्यादि महत्वपूर्ण रहे हैं |

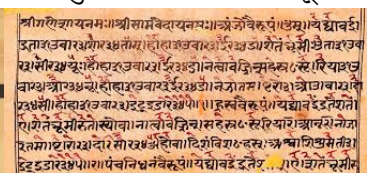

वेदों में आयुर्वेद

भारतीय वैदिक साहित्यों में चार महत्वपूर्ण वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की बात कही गई है | इसी में अथर्ववेद के उपवेद के रूप में आयुर्वेद की व्याख्या की गई है | आयुर्वेद, भारत का एक स्वदेशी प्राचीन चिकित्सा विज्ञान, 5000 वर्ष से अधिक पुराना है। हालाँकि औषधीय प्रयोजन के लिए जड़ी-बूटियों के उपयोग का उल्लेख विश्व के सबसे पुराने उपलब्ध लिखित साहित्य ऋग्वेद में मिलता है। आयुर्वेदिक औषधियों के अधिकांश घटक जड़ी-बूटियों, पौधों, फूलों एवं फलों आदि से प्राप्त की जातीं हैं। अतः यह चिकित्सा प्रकृति के निकट है। आयुर्वेद भोजन तथा जीवनशैली में सरल परिवर्तनों के द्वारा रोगों को दूर रखने के उपाय सुझाता है। आयुर्वेदिक औषधियाँ स्वस्थ लोगों के लिए भी उपयोगी हैं।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0024

वनौषधियों एवं जड़ी-बूटियों का प्रत्यक्ष अवलोकन के तहत हमने आँवला, तुलसी, भूई आँवला, मीठा लीम, गिलोय, शंखपुष्पी, अडूसा, विदारी कन्द, सफ़ेद चन्दन, वासाका, अकरकरा, मुनक्का, शतावरी, छोटे हर्रा, ब्राह्मी, बेल, कमल केशर, गोखरू, कचुर, जटामांसी, नागरमोथा, लौंग, पुष्करमूल, काकड़ा सिंघी, पुनर्नवा, जीवन्ति, दसमूल, अश्वगंधा, सोंठ, मुलेठी, कंटकारी, वंशलोचन, पिपली, दालचीनी, तेजपत्ती, नागकेशर, इलायची इत्यादि की उपलब्द्धता, पहचान, एवं इनके उपयोग के बारे में अध्ययन की प्रारम्भिक शुरुआत की है |

गत दिनों हम लोगों ने अपने क्षेत्र में निवासरत युवा वैद्याचार्य के मार्गदर्शन में इन वनौषधियों,जड़ी-बूटियों से निर्मित होने वाले विविध स्वास्थ्यवर्धक चीजों यथा च्यवनप्राश, केशवर्धक तेल आदि निर्माण प्रक्रिया में भाग लिया है |

हमारे छत्तीसगढ़ की जंगलों मे औषधीय गुणों से युक्त दहिमन का पेड़ अब दुर्लभ हो चला है | ये पेड़ सतपुड़ा, अमरकंटक और सरगुजा संभाग से लगे वन क्षेत्र और कबीरधाम जिले के जंगलों में प्रमुखता से पाये जाते हैं। इसके साथ ही यह अब धमतरी व बालोद जिले के भी जंगलों में कहीं-कहीं पर मिल रहे हैं |

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0024

दहिमन एक फायदे अनेक - ये वृक्ष किसी संजीवनी बूटी से कम नही है | वैज्ञानिक नाम कॉर्डिया मैकलोडी सहित इसे दही पलाश, दाई वास आदि नामों से जाना जाता है | इसके पत्ते या छाल के जूस कैंसर, ब्लड प्रेशर, पीलिया, किडनी सुजन, पाचन सम्बन्धी रोग, मोटापा, सर्पदंश, जहर खुरानी, शराब का नशा छुड़ाने, घाव उपचार, और मानसिक रूप से पीड़ित लोगों के लिये रामबाण औषधि मानी गई है |

दहिमन के पत्ते में कुदरती तकनीक :- दहिमन अपने आप में एक जीवंत कुदरती तकनीकी प्रमाण है | दहिमन के पत्तों पर आप बिना किसी स्याही के कुछ भी लिखेंगे तो लिखा हुआ शब्द या चित्र पत्ते में भीतर की ओर रेखा खिंचने के बजाय थोड़ी ही देर में ऊपर की ओर उभर कर आता है। हम लोगों ने भी अपने नजदीक के जंगल में उपलब्द्ध इनके पेड़ का प्रत्यक्ष अवलोकन व अध्ययन किया है | इनके पत्तों पर शब्द लिखे, जो कुछ देर बाद स्पष्ट उभरकर हमें दिखने लगे | इनके तनो के हरे-भूरे छालों को छिलने पर कुछ ही देर में इस पर कालापन नजर आने लगा | इनके अलावा हमारे साथियों ने नशा छुडाने के लिए भी इनकी जांच की | स्थानीय गाँव के लोग इनकी संक्षिप्त उपयोग भी कर रहे हैं लेकिन इन्हें साधारण पेड़ समझकर इनके लकड़ियों को काटकर यूँ ही दोहन कर रहे हैं | इनके उचित संरक्षण के लिए वनविभाग व ग्रामीणों को भी सचेत करने हमने चर्चा की है |

आजादी में इनकी रही भूमिका :- माना जाता है कि आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हमारे भारतीय क्रान्तिकारी उस वक्त अपने साथियों की कोई गुप्त सन्देश भेजने के लिए इन पत्तों का उपयोग किया करते थे | जिसके चलते अंग्रेजों ने जंगलों से इन

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0024

पेड़ों को भी नेस्तनाबूद करने का कुत्सित प्रयास किया | जिस कारण आज भी ये दुर्लभ बहुपयोगी वनौषधि विलुप्ति के कगार में है |

दहिमन: संरक्षण व संवर्धन के लिए प्रयास- कुदरत ने हमें न जाने इसी तरह से कितने दुर्लभ चीजें निःशुल्क रूप से हमारे इर्दगिर्द उपलब्द्ध करा दिए हैं | जरूरत है कि हम इन्हें सहेजें | जैसे हमने अपने वनौषधि अध्ययन के दौरान दहिमन के पेड़ का अवलोकन किया | उसी दौरान हमारे समूह के एक साथी ने जंगल में इसके तक आगामी पहुँच बनाने के लिए इनके रास्ते में मौजूद अन्य पेड़ों पर पत्थर से निशान बनाने लगा | जिसे हमने मना किया | इस पेड़ को अधिक से अधिक जगहों तक फ़ैलाने के लिए अध्ययन में जुट गए हैं | इसकी पौध बढ़ाने के लिए हमारे द्वारा सतत अनुसंधान जारी है | इनके बारे में लोगों तक जागरूकता फैलाई जा रही है |

आधुनिक तकनीक और पर्यावरण संरंक्षण – उक्त पेड़ों के अध्ययन के दौरान मैंने अपने मोबाईल से जीपीएस कैमरा का उपयोग कर इनके फोटोग्राफ्स लिए हैं | जिसमें उनके चित्र के साथ-साथ उनके निश्चित स्थान की सटीक जानकारी अक्षांश व देशांश में हमें मिल गई | जिसके माध्यम से हम गूगल मैप के जरिये बिना किसी अन्य पेड़-पौधों को नुकसान पहुंचाए उस स्थान तक सहजता से पहुँच सकते हैं |

निष्कर्ष : भारतीय ज्ञान प्रणाली ने पूरे विश्व को आज भी अपने भीतर छुपे इन रहस्यमयी सूचनाओं को समझने के लिए लालायित कर रखा है | सर्वाधिक आवश्यकता है हम स्वयं सबसे पहले अपने आसपास मौजूद इन कुदरती शक्तियों को जानें | इनकी महत्ता और उपयोगिता की सार्थकता को स्वयं स्वीकार करें | वैश्विक चकाचौंध की आड़ में अपनी संस्कृति व विरासत को उपेक्षित कर विकास की भ्रमित दौड़ से बचें | अपनी आंतरिक प्रतिभा के उन्नयन के लिए सतत प्रयासरत रहना और प्राचीनता के संग आधुनिक तकनीकों का बेहतर समन्वय वर्तमान के कार्यों में करना ही हमारा परमधर्म है | जय हिन्द ! जय भारत ! (Thanks Also Google Resources & Dr.MKSahu)